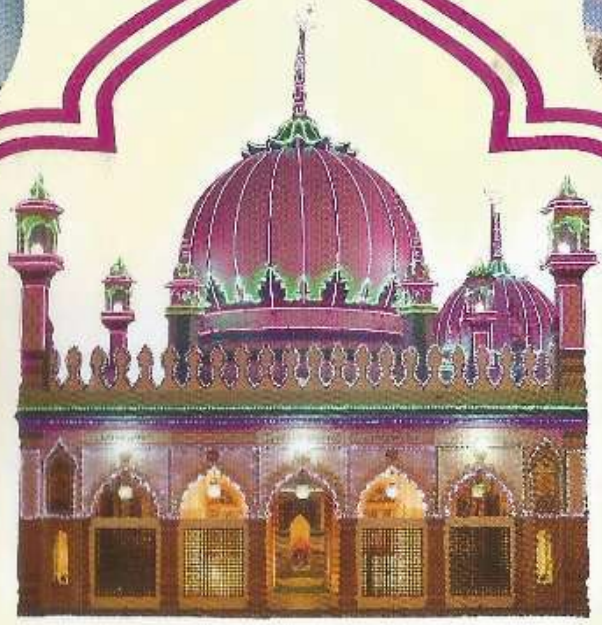

शजरए तय्येबह

सिलसिलए आ़लिया क़ादरिया चिश्तिया अ़बुलउ़लाइया
जहाँगीरिया हसनिया अ़ज़ीज़िया लियाक़तिया जावेदिया

हलक़ा बगोशान

बदरुल औलिया शैख़ुल मशाएख़ हज़रत

ख़्वाजा सूफ़ी जावेद हुसैन शाह

साहब क़िबला मद्दज़िल्लहुल आ़ली
मुतवल्ली व सज्जादह नशीन
ख़ानक़ाहे हसनी अ़ज़ीज़ी लियाक़ती
मुर्शिद नगर, भैंसौड़ी शरीफ़, तहसील मिलक,
ज़िला रामपुर, यू. पी. (भारत) फोन : 05960 224144
www.khwajahasan.com

पेश करदा : मुहिब्बुल फ़ुक़रा हाजी सूफ़ी
सय्यद मोहम्मद मोईन मियाँ काज़मी
नवाबी लियाक़ती जहाँगीरी, देहली

सुबूते बैअ़त व फ़ाएदए बैअ़त

सूफ़ियाए क्राम की इस्तेलाह में मुर्शिद के हाथ पर इत्तेबाए़ शरीअ़त सच्ची इताअ़त के वादे पे पाबन्दी "और नफ़्स की पाकीज़गी और दिल की सफ़ाई" को **बैअ़त** कहते हैं। यही मशाएख़े त़रीकत़ की बैअ़त है जिसको उर्फ़े आम में पीरी मुरीदी कहा जाता है। जिस के शरीअ़ते मुत़ह्हरह से जाइज़ होने पर क़ुरआने करीम की बहोत सी आयतों और अहादीसे पाक से सुबूत मिलता है।

आयत : इन्नल्लज़ीना युबायिऊनका इन्नमा युबायिऊनल्लाह० यदुल्लाहि फ़ौक़ा ऐदीहिम

तरजमा : बेशक जो लोग (ऐ रसूल) तुम्हारी बैअ़त करते हैं। वो तो अल्लाह ही से बैअ़त करते हैं। उन के हाथ पर अल्लाह का हाथ है। (सूरए फ़तह पारह न.26 रुकूअ़ न.8 आयत न.10 ब मौक़ा सुलह हुदैबियह व बैअ़ते रिज़वान)

आयत : या अय्युहन्नबीयु इज़ा जाअकल मुअ्मिनातु युबायिअ़नका अ़ला अंला युश्रिकना बिल्लाहि शैअंव वला यसरिक़ना वला यज़नीना वला यक़तुलना औलाद-हुन्ना वला यअतीना बिबुहतोनिँय यफ़तरीनहू बैना ऐदीहिन्ना व अरजुलिहिन्ना वला य-अ़-सीनका फ़ी मारूफ़िन फ़बा यिअ़हुन्ना वसतग़फ़िर लहुन्नाल्लाह ♭ इन्नल्लाहा ग़फ़ूरुर्रहीम ♁ (सूरए मुमतहिनह पारह न.28 रुकूअ़ न.8 आयत न.12 ब मौक़ा फ़तहे मक्का)

तरजमा : ऐ नबी जब तुम्हारे हुज़ूर मोमिन औरतें इस बात की बैअ़त करने के लिए आएँ कि वो अल्लाह तआ़ला के साथ शिर्क नहीं करेंगी और चोरी न करेंगी और ज़िना न करेंगी और अपनी औलाद को क़त्ल न करेंगी और अपने हाथों व पैरों के दरमियान गढ़ कर किसी पर बोहतान न लगाएँगी और किसी हुक्मे शरीअ़त में तुम्हारी ना फ़रमानी न करेंगी तो उन औरतों से बैअ़त लो और उनके लिए मग़फ़ेरत चाहो अल्लाह से। बेशक अल्लाह तआ़ला बख़्शने वाला मेहेरबान है।

तरजमा हदीस शरीफ़

हज़रत ओबादह बिन सामित रदीअल्लाहु तआ़ला अन्हो से रवायत है कि हुज़ूर रसूले करीम सल्लल्लाहो तआ़ला अ़लैहे व आलिही वसल्लम ने सहाबा क्राम की जमाअ़त से जो उस वक़्त हाज़िर थी ये फ़रमाया कि तुम लोग मुझसे बैअ़त करो इस बात पर कि ख़ुदा के साथ किसी को शरीक न ठहराओगे, और चोरी न करोगे और ज़िना न करोगे, और अपनी औलाद को क़त्ल न करोगे, और अपने आप से गढ़ कर किसी पर बोहतान न बाँधोगे, और किसी हुक्मे शरीअ़त में ना फ़रमानी न करोगे, जिसने इसको पूरा किया तो इसका सवाब अल्लाह की बारगाहे करम में है, और जो इन गुनाहों से किसी का इरतिकाब कर बैठे और उसको दुनिया में सज़ा दे दी जाए तो ये उसके लिए कफ़्फ़ारह और पाक करने वाली है और जो इन गुनाहों में से कुछ करे और अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल उसको छुपाए रखे तो ये अल्लाह के सुपुर्द है चाहे उसे मुआ़फ़ फ़रमा दे चाहे (आख़िरत में) सज़ा दे , तो हम सब ने इन सब पर हुज़ूर सल्ललाहो अ़लैहि व आलिहि व सल्लम से बैअ़त की

(बुख़ारी शरीफ़ किताबुल ईमान बाब ११)

फ़ाएदए बैअ़त

बैअ़त का फ़ाएदा ये है कि मुरीद गुनाहों से ऐसा पाको साफ़ हो जाता है जैसा कि माँ के पेट से बेगुनाह पैदा हो। और अल्लाह तआ़ला उन मोमिनीन से राज़ी व ख़ुश हो जाता है जो ख़ुलूसे दिल के साथ बैअ़त हो जाते हैं। और यही बैअ़त क़ुर्बे ख़ुदा वन्दी और रज़ाए इलाही का सबब है

हिदायात

(१) इस सिलसिलए आलिया के मुरीद को लाज़िम है कि मज़हबे अहले सुन्नत वल जमाअत व पीराने सलासिल के मशरबे तसव्वुफ़ पर मज़बूती से क़ाएम रहे (२) हज़राते अहले बैते क्राम व सहाबए क्राम रिदवानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन से वालेहाना मोहोब्बत सादाते ओज़्ज़ाम से अक़ीदत को ईमान का अहम हिस्सा समझे और हमेशा उनके दामने पाक को मजबूती से थामे रहे (३) बावज़ू रहे (४) अहकामे शरीअत व तरीक़त पर अमल ज़रूरी है (५) नमाज़े जुम्आ क़ज़ा न करे (६) तिलावते कुरआन मजीद पाबन्दी से करे (७) महज़ अल्लाह की रज़ा की ग़रज़ से इबादत करे (८) ज़िक्रो अश्ग़ाल तसव्वुरे शैख़ क़ाएम रखे शजरए तय्येबह पढ़ता रहे (९) कम खाने, कम सोने, कम बोलने की आदत डाले (१०) रिज़्क़े हलाल के लिए तेजारत या मज़दूरी करता रहे (११) मौत को हमेशा याद रखे (१२) बहसो मुबाहेसा व फ़ुज़ूल गुफ़्तुगू से परहेज़ करे (१३) कुदूरत से दिल को साफ़ रखे और अपनी बुराइयों पर नज़र रखे (१४) अपने पीर से राब्ता मज़बूत रखे क्यों कि राबतए शैख़ ही राबतए हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व आलिही वसल्लम है (१५) ख़ुद को बन्दगाने ख़ुदा का ख़ादिम समझे मख़दूम बनने का ख़याल भी दिल में न लाए (१६) दिल बयार दस्त बकार का सबक़ याद रखे (१७) ज़ोहदो तक़वा और सदाक़त इख़्तियार करे.

नोट : अहकाम व मसाइले शरीअत की मालूमात के लिए (किताबें) बहारे शीरअत व अहकामे शरीअत व क़ानूने शरीअत पढ़े तरीक़त व मारेफ़त व हक़ीक़त को समझने और मनाज़िले सुलूक तै करने के लिए कलीदे एजाज़ मस्नवी गंजे राज़ निगारे यज़्दाँ व सीरते फ़ख़रुल आरफ़ीन शरीफ़ का मुतालिआ करते रहना चाहिये ।

मअ़मूलाते शैख़

सूफ़ियाए किराम की इस्तिलाह में मअ़मूलाते शैख़ उन उमूर को कहते है जिनको शैख़ ने इख़्तियार किया है । मुरीद पर अपने हज़रत शैख़ के मअ़मूलात को इख़्तियार करना वाजिब और लाज़िम है । इस सिलसिलए आ़लिया के पीराने उ़ज़्ज़ाम व रह रवाने त़रीक़त के नज़दीक फ़राइज़ और सुन्नतों के बाद ज़िक्रो मुराक़िबा और मअमूलाते शैख़ में उस वक़्त तक मशग़ूल रहना ज़रूरी है जब तक कि फ़ना हासिल न हो जाए ।

अवराद

(1) सुबहानल्लाहि व बिहमदिही (11 मरतबा पढ़े)

(2) सुबहानल्लाहि वलहम्दु लिल्लाहि व लाइलाहा इल लल्लाहु वल्लाहु अकबर (34 मरतबा पढ़े)

(3) ला इलाहा इल लल्लाहु वहदहू ला शरीका लहू लहुल मुल्कु व–लहुल हम्दु युहयी व युमीतु बियदि हिल ख़ैर वहुवा अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर (20 मरतबा पढ़े)

(4) सय्यिदुल इस्तिग़फ़ार : अल्लाहुम्मा अनता रब्बी ला इलाहा इल्ला अनता ख़लक़तनी व अना अ़ब्दुका व अना अ़ला अ़हदिका व–व–अ़–दिका मस्तत अतु अऊ़ज़ु बिका मिन शर्रि अबूउ लका बिनिअ़मतिका अलय्या व अबूउ बिज़म्बी फ़ग़फ़िर्ली फ़–इन्नहू ला यग़फ़िरुज़्ज़ुनूबा इल्ला अनता

सय्यिदुल इस्तिग़फ़ार हर नमाज़े पंजगाना के इख़तिताम और दुआ के बाद एक बार पढ़ने का मअ़मूल शरीफ़ है और नमाज़े अ़सर व मग़रिब के दरमियान कम से कम तीन बार ज़्यादा की कोई हद नहीं ।

(5) वज़ीफ़ए ग़ौसिया : अल मुहीतुररब्बुश्शहीदुल हसीबुल फ़अ्आलुल ख़ालिक़ुल बारिउल मुसव्विरु (11 मरतबा पढ़े)

(6)

चेहेल काफ़ शरीफ़

कफ़ाका रब्बुका कम यक्फ़ीका वाकिफ़तन
किफ़्काफ़ुहा ककमीनिन काना मिन कलका
तकरु कर्रन क-क़र्रिल कर्रि फ़ी कबदिन
तजल्ला मुशकशकतन कलुक लुकिन लकका
कफ़ाका माबी कफ़ाकल काफ़ु कुरब-त-हू
या कव-क-बन काना तहकी
कव कबल फ़लका
कम से कम तीन बार या जितना हो सके पढ़े

(7) **दरूद शरीफ़ :**

अल्लाहुम्मा सल्ले अ़ला सय्यिदना मोहम्मदिनिन नबीयिल उम्मीयि व-आलिहि व अस्हाबिही व बारिक वसल्लिम
(बाद नमाज़े अ़सर टहलते हुए 500 या 300 मरतबा पढ़े)

(8) **दरूद शरीफ़ ग़ौसिया :**

अल्लाहुम्मा सल्ले अ़ला सय्यिदना मोहम्मदिनिन नबीयिल उम्मीयित्ताहिरिज़्ज़कीये सलातन तुहल्लु बिहल अ़क़्दु व तुफ़क्कु बिहल करबु सलातन तकूनु लका रिदँव व लिहक़्क़िही अदाअँव व आलिही व अस्हाबिही व बारिक व सल्लिम (11 मरतबा पढ़े)

(9) अल्लहुम्मा सल्ले अ़ला सय्यिदना मोहम्मदिँव व अ़ला आलि सय्यिदना मोहम्मदिँव व अ़ला आलि सय्यिदनल ग़ौसिल अअ़ज़म

(10) दुआए इस्तिग़फ़ार :
अस्तग़फ़िरुल्लाहा रब्बी मिन कुल्लि ज़मबिँव व अतूबु इलैह (11 मरतबा पढ़े)

(11) आयते क़ुतुब शुमाली :

सुम्मा अनज़ला अ़लैकुम मिम बादिल ग़म्मि अ–म–न–तन नुआ़ संय्यग़शा ताइफ़तम मिन कुम व ताइफ़तुन क़द अ–हम्मतहुम अनफुसुहुम यज़ुन्नूना बिल्लाहि ग़ैरल हक़्क़ि ज़न्नल जाहिलीयह(ط) यक़ूलूना हल लना मिनल अम्रि मिन शैअ(ط) कुल इन्नल अमरा कुल्लहू लिल्लाह(ط) युख़फ़ूना फ़ी अनफुसिहिम माला यूबदूना लक(ط) यक़ूलूना लव काना लना मिनल अम्रि शैउममा क़ुतिलना हाहुना(ط) कुल्लव कुन्तुम फ़ी बुयूतिकुम ल–ब–र–ज़ल्लज़ीना कुतिबा अलैहिमुल क़त्लु इला मदाजिइहिम(ج) व लियबत–लि यल्लाहु मा फ़ी सुदूरिकुम व लि युमहिहसा मा फ़ी क़ुलूबिकुम(ط) वल्लाहु अ़लीमुम बिज़ा तिस्सुदूर O (सूरए आले इमरान पारा नं 4 आयत नं. 154 बाद नमाज़े फ़ज्र 11 मरतबा पढ़े रुख़ बजानिब गोशए शुमाल रखे)

(12) आयते क़ुतुब जुनूबी

मोहम्मदुर्रस्सूलुल्लाह(ط) वल्लज़ीना मअ़हू अशिद्दाउ अ़लल कुफ़्फ़ारि रु–ह–माउ बैनहुम तराहुम रुक्क–अ़न सुज्जदँय्यबतग़ूना फ़दलम मिनल्लाहि व रिदवाना(ز) सीमाहुम फ़ी वुजूहिहिम मिन अ-स-रिस्सुजूद(ط) ज़ालिका मसलुहुम फ़ित्तौराति ۛ व मसलुहुम फ़िल इनजील ۛ क–ज़रइन अख़रजा शतअहु फ़–आज़रहू फ़सतग़लज़ा फ़सतवा अ़ला सूक़िही युअ़ जिबुज़्ज़ुर्राअ़ा लियग़ीज़ा बिहिमुल कुफ़्फ़ार(ط) वअ़दल्लाहुल्लज़ीना आमनू व अ़मिलुस्सालिहति मिनहुम मग़फिरतँव व अजरन अ़ज़ीमा O (सूरए फ़तह, पारा नं. 26 आयत नं. 29 बाद नमाज़े मग़रिब 11 मरतबा पढ़े रुख़ बजानिब गोशए जुनूबो मग़रिब रखे)

(13) दुआ़ए–तमीम अनसारी रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु :

या दलीलल मुतहय्यिरीना या ग़यासल मुस्तग़ीसीना या मुजीबु दअ़्वातिल मुदतर्रीना या इलाहल आलमीना बिहक़्क़ि इय्याका नअ़्बुदु व इय्याका नस्तईन। (बाद नमाज़े फ़ज्र व मग़रिब तीन–तीन मरतबा पढ़े)

(14) असमाए मुबारक सय्यिदना ग़ौसुल अअ़ज़म रदिअल्लाहु तआला अन्हु :

सय्यिदना मोहीयुद्दीन अमरुल्लाह

शैख़ मोहीयुद्दीन फ़दलुल्लाह

औलिया मोहीयुद्दीन अमानुल्लाह

मिस्कीन मोहीयुद्दीन नूरुल्लाह

ग़ौस मोहीयुद्दीन क़ुतुबुल्लाह

सुलतान मोहीयुद्दीन सैफ़ुल्लाह

ख़्वाजा मोहीयुद्दीन क़ुरबानुल्लाह

मख़दूम मोहीयुद्दीन बुरहानुल्लाह

दरवैश मोहीयुद्दीन आयतुल्लाह

बादशाह मोहीयुद्दीन ग़ौसुल्लाह

फ़क़ीर मोहीयुद्दीन शाहिदुल्लाह

(बाद नमाज़े फ़ज्र व मग़रिब 11 मरतबा पढ़े)

शजरए त़य्येबह मन्जूम

ख़ुदा बहुरमते अरवाहे अम्बिया मददे
पए मोहम्मदो महमूदो मुस्त़फ़ा मददे !!

बराए पन्जतने पाक व चार यारे नबी
ब बरकते हमा अरवाहे औलिया मददे

हम्द बेहद है जनाबे किब्रिया के वास्त़े
तोहफ़ए सलवात शाहे मुस्त़फ़ा के वास्त़े !!

या मेरे अल्लाह जुमला अम्बिया के वास्त़े
हाजतें बर ला मेरी कुल औलिया के वास्त़े

पढ़ तहिय्यत अहले बैत और चार यारों की ज़रूर
फिर अदब से हाथ उठा अपने दुआ के वास्त़े

इश्क़ो ईमाँ को हमारे जावेदाँ करदे ख़ुदा
हज़रते जावेद बदरुल औलिया के वास्त़े

या इलाही बन्दगी की तू मुझे तौफ़ीक़ दे
शह लियाक़त नूर चश्मे औलिया के वास्त़े

इज़्ज़ते दारैन दे मुझको इलाहुल आ़लमीन
मुर्शिदे पाकाँ अ़ज़ीज़ुल औलिया के वास्त़े

बन्दए आ़जिज़ हूँ यारब कर मेरी तौबा कुबूल
हज़रते ख़्वाजा मोहम्मद हसन सुल्त़ानुल औलिया के वास्त़े

आफताबे दीनों मिल्लत शाह मोहम्मद इनायत हसन
माहताबे सब्रो तसलीमो रज़ा के वास्त़े !!

हो दुआ मक़बूल मेरी सदक़ए लातक़नतू
शहंशाहे मोहम्मद नबी रज़ा के वास्ते

दिल को मेरे या ख़ुदा दे ज़िन्दगी व ताज़गी
शाहे अ़ब्दुलहइ मक़बूलुददुआ के वास्ते !!

मुझ को अपनी बारगाहे अहदियत में कर क़ुबूल
मुख़्लिसुर्रहमाँ जहाँगीरे हुदा के वास्ते

कर मदद मेरी ख़ुदाया हर घड़ी हर हाल में
शाह इम्दादे अलीये बासफ़ा के वास्ते !!

मुझ को अपने ज़िक्रो फ़िक्रो शग़ल में मस्रूफ रख
शह मोहम्मद मेहदिये नूरुलवरा के वास्ते

नूरे ईमाँ से मेरे दिल को मुनव्वर कर ख़ुदा
हज़रते मज़हर हुसैन हाजत रवा के वास्ते !!

फ़रहते दिल दे मुझे या रब न होवे फ़िक्रे ग़ैर
फ़रहतउल्ला इफ़्तिख़ारुल औलिया के वास्ते

हुसनो ख़ूबी से मेरे दिल को ख़ुदाया कर हसन
हसन अली शाहे हसन अबरे सख़ा के वास्ते !!

नेमते दीं से मुझे कर या इलाही सरफराज़
शाह मुन्अम पाक बाज़े अतक़िया के वास्ते

रख शरीअ़त और तरीक़त पर मुझे साबित क़दम
शह ख़लीलुद्दीन सय्यद महलक़ा के वास्ते !!

नफ़्स की रूबाहबाज़ी से ख़लासी दे मुझे
मीर सय्यद जाफ़रे शम्सुद्दुहा के वास्ते

दूर कर मेरी ख़ुदी और अहले दिल कर दे मुझे
सय्यद अहलुल्लाह मीर अहले सफ़ा के वास्ते !!

नज़्म कर मेरा क़ुबूल ऐ बादशाहे दो जहाँ
शह निज़ामुद्दीन सय्यद औलिया के वास्ते

शह तक़ीउद्दीन का सदक़ा मुझे कर मुत्तक़ी
शह नसीरुद्दीन सय्यद बे बहा के वास्ते !!

सय्यदे महमूदो सय्यद मीर फ़ज़्लुल्लाह शाह
शाहे क़ुत़बुद्दीं दुरे दुरजे फ़ना के वास्त़े
शाह नजमुद्दीँ क़लन्दर सय्यद मुबारक ग़ज़नवी
शह निज़ामुद्दीन सय्यद सानिया के वास्त़े
गुनचए दिल को खिला मेरे इलाहुल आलमीँ
शह शहाबुद्दीन साहिब पुर ज़िया के वास्त़े !!
क़ादिरे मुत़लक़ है तू अपनी इनायत मुझपे रख
ग़ौसे आज़म शाहे जीलाँ क़ुत्बुल औलिया के वास्ते !!
अज़ बराए बू सईदो बुलहसन या ज़लजलाल
रह्म कर बू यूसुफ़े रहमत नुमा के वास्त़े
मुझ को अपने इश्क़ में मतवाला कर दे ऐ ख़ुदा
हज़रते अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ उल्फ़त रसा के वास्त़े !!
शह रहीमुद्दीन व शह बूबक्र शिबली का तुफ़ैल
फ़ज़्ल कर हज़रत जुनैदे पेश्वा के वास्त़े
शह सिर्री सक़ती व शह मारूफ़े करख़ी का तुफ़ैल
शह इमामे दीँ अली मूसा रज़ा के वास्त़े !!
मूसाए काज़िम का सदक़ा इल्मो अमलो हिल्म दे
जाफ़रो बाक़र शहे ज़ैनुल एबा के वास्त़े
राह में तेरी रहूँ साबित क़दम ऐ बेनियाज़
सब्र दे मुझको शहीदे करबला के वास्त़े !!
मारेफ़त के नूर से दिल को मेरे मामूर कर
पेशवा ऐ दीं अलीये मुरतज़ा के वास्ते
या इलाही मेरे इस्याँ मुझ को शरमाते हैं अब
बख़्श दे मुझ को मुहम्मद मुसत़फ़ा (स.अ.) के वास्त़े
इश्क़ दे महबूब का मुझको इलाहुल आलमीन
सय्येदह मासूमा हज़रत फ़ात़िमा (र.अ.) के वास्त़े !!

इश्क़ दे मुर्शिद का मुझ को इलाहुल आलमीँ
अम्बियाओ औलिया ओ अससिफया के वास्ते !!

अब तो बिगड़ी को बना दे अे मेरे परवर दिगार
शैख़ुल आज़म शह अमीरे बुलउ़ला के वास्ते

रहती दुनिया तक रहे इस बाग़ की या रब बहार
फूलता फलता रहे यूँ ही गुलिस्ताने हसन !!

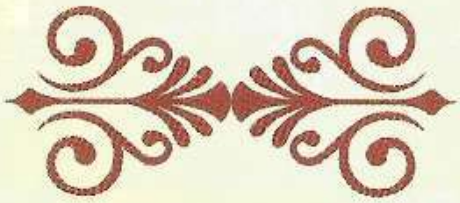

दरूद ताज शरीफ़

अल्लाहुम्मा सल्ले अला सय्यिदना व मौलाना मोहम्मदिन साहिबित्ताजि वल मेअ़राजि वल बुराक़ि वल अ़लम दाफ़िइ़ल बलाइ वल वबाइ वल क़हति वल मरदि वल अलम इस्मुहू मकतूबुम मरफ़ूउ़म मश्फ़ूउ़म मनक़ूशुन फ़िल्लौहि वल क़लम सय्येदिल अ़रबि वल अ़जम जिस्मुहू मुक़द्दसुम मुअ़त्तरुम मुतह्हरुम मुनव्वरुन फ़िल बैति वल हरम शमसिद्दुहा बद्रिद्दुजा सदरिल उ़ला नूरिलहुदा कहफ़िलवरा मिस्बाहिज़्ज़ुलम जमीलिश्शियम शफ़ीइ़ल उमम साहिबिल जूदि वल करम वल्लाहु आ़सिमुहु व जिबरीलु ख़ादिमुहू वल बुराकु मरकबुहू वल मेअ़राजु सफ़रुहू व सिदरतुल मुन्तहा मक़ामुहू व क़ाबा क़ौसैनि मतलूबुहू वल मतलूबु मक़सूदुहू वल मक़सूदु मौजूदुहू सय्यिदिल मुरसलीन ख़ातमिन नबीय्यीन शफ़ीइ़ल मुज़्निबीन अनीसिल ग़रीबीन रहमतिल लिल आ़लमीन राहतिल आ़शिक़ीन मुरादिल मुश्ताक़ीन शम्सिल आ़रिफ़ीन सिराजिस्सालिकीन, मिस्बाहिल मुक़र्रबीन मुहिब्बिल फ़ुक़राइ वल ग़ुरबाइ वल यतामा वल मसाकीन सय्येदिस्सक़लैन नबीयिल हरमैन इमामिल क़िबलतैन वसीलतिना फ़िद्दारैन साहिबि क़ाबा क़ौसेन महबूबे रब्बिल मशरिक़ैन व रब्बिल मग़रिबैन जद्दिल हसनि वल हुसैन मौलाना व मौलस्सक़लैन अबिल क़ासिमि सय्यिदना मोहम्मद इब्ने अब्दिल्लाह नूरिम मिन नूरिल्लाह या अय्युहल मुश्ताक़ूना बिनूरि जमालिही

बलग़ल उ़ला बिकमालिही
कशफ़द्दुजा बिजमालिही
हसुनत जमीउ़ ख़िसालिही
सल्लू अ़लैहि व आलिही
वअस्हाबिही वसल्लिमू तसलीमा

अल्ला हुम्मा सल्ले अ़ला सय्यिदना व मौलाना मोहम्मदिँव व अ़ला आले सय्यिदना व मौलाना मोहम्मदिन व बारिक वसल्लिम

मुनाजात

या ख़ुदा ताइब को मरज़ीयात की तौफ़ीक़ दे
और रख साबित क़दम अपनी इताअ़त पर इसे
हो अ़ता इश्क़ो मोहोब्बत इस गदा के वास्ते
और रख महफ़ूज़ शिर्को मअ़सियत से ऐ ख़ुदा
और कर इस्लामो ईमाँ पर तू इसका ख़ात्मा
अपने मक़बूलाने दरगाहे उला के वास्ते
हो सुकूने क़ल्ब हासिल दूर हो हर इन्तेशार
शैख़ की तालीम और तल्क़ीन पर रख बरक़रार
रहमते आ़लम मोहम्मद मुस्तफ़ा के वास्ते
हों मेरे मख़्दूम ज़ादे साहिबे फ़ज़्लो शरफ़
कर ब औसाफ़े कमालाते दो आ़लम मुत्तसिफ़
तू हो उनका वो रहें तेरी अ़ता के वास्ते
मेरे अह्बाबे त़रीक़त भी रहें आबादो शाद
दीनो दुनिया में ब एज़ाज़ो क्रामो बा मुराद
फ़ज़्ल फ़रमा जुम्ला इख़्वानुस्सफ़ा के वास्ते
मेरे हक़ में जो हो मरज़ी मैं हूँ राज़ी बा रज़ा
मरज़िये मौला हमा औला रज़ीना बिल क़ज़ा
तेरे घर में क्या कमी है मुझ गदा के वास्ते
अपने मौला के क़दम के साए के नीचे जियूँ
और मरना हो तो उनके आस्ताने पर मरूँ
ज़िन्दगी और मौत हो उनकी रज़ा के वास्ते
ता अबद मौला हमारे शम्अ़ बज़्मे जाँ रहें
और हम सौ जाँ से परवाना सिफ़त क़ुरबाँ रहें
कर अ़ता कौकब को सौ जानें फ़िदा के वास्ते

सूफ़ियाना व आरिफ़ाना कलाम

क्या कहूँ कैसी हुई मुझ पर इनायत पीर की
अपनी सूरत ही नज़र आती है सूरत पीर की
बन्दए नाचीज़ को यक्ता व हम्ता कर दिया
ये तवज्जह ये अ़ता अदना करामत पीर की
कुफ़्रो ज़ुल्मत शिर्को बिदअ़त हो गए मअ़दूम सब
जब से क़ाएम हो गई है दिल में सूरत पीर की
फ़िल हक़ीक़त राह मुश्किल है सुलूको इश्क़ की
तै उसी ने की हुई जिस पर इनायत पीर की
इस जहाँ में हो गया दीदारे हक़ जिसको नसीब
उससे जा के पूछे कोई क्या है सूरत पीर की
क़ुत्ब है कोई, कोई अबदाल है, कोई वली
ज़ेरे साया पीर के अल्लाह रे रिफ़अ़त पीर की
वासिले हक़ जो हुवा तफ़्रीक़ फिर क्या रह गई
शाने कसरत मे अयाँ है शाने वहदत पीर की
जैसे था मेराज की शब आना जाना आन में
वैसे ही मुश्किल कुशाई है करामत पीर की
हाथ को अहमद के जब हक़ ने कहा ख़ुद अपना हाथ
क्यों न हो फिर सिबग़तुल्लाह रंगो सूरत पीर की
हों ओवैसे क़रनी या ख़ुसरो कि हों मौलाए रूम
जानते ये लोग थे बे शुब्ह अज़मत पीर की
शौक़ है गर हक़ परस्ती का तो सुन ऐ बे ख़बर
कर परस्तिश ज़ाते मौला देख सूरत पीर की

इनकिशाफ़

निज़ामे सिलसिला क्या ख़ूब हक़ ने फ़रमाया
मुरीदे ख़ास जो आया वो फ़ख़्रे पीर आया

बग़ौर देख यदुल्लाहि फ़ौक़ा ऐदीहीम
ये किस का हाथ है जो तेरे हाथ में आया

फ़ना फ़िश्शैख़ में मुज़मर हैं असरारे बक़ाबिल्लाह
ख़ुदा तौफ़ीक़ देता है जिन्हें मुर्शिद पे मरते हैं